कोइक जागा पकड़ के, लड़ें इनसे हम ।
वचन इने सुनावनें, कहो इलाज कोई तुम ॥५५॥

दिल्ली को छोड़कर किसी और स्थान पर बैठकर औरंगजेब को किस तरह से कुरान से पैगाम भेजें। इस विषय पर सब सुन्दरसाथ से विचार-विमर्श किया ।

ऐसा विचार करके, दिल्ली से चले जब ।
साहजहानपुर बोड़िया मिने, आये पहुंचे तब ॥५६॥

सब सुन्दरसाथ से विचार-विमर्श करने के बाद दिल्ली को छोड़कर श्री जी इस कार्य के लिए शाहजहाँपुर बोड़िया आए ।

केतेक साथ दिल्ली मिने, राख के आप चले ।
हम लेंइगे पीछे ते खबर, जाएंगे उस जगे ॥५७॥

महिला सुन्दरसाथ तथा बूढ़ों को श्री जी ने दिल्ली की हवेली में ही छोड़ा और कहा कि हम इस कार्य के लिए जहां कहीं भी जाएंगे, वहां से पत्र व्यवहार द्वारा आपका समाचार लेते रहेंगे ।

महामत कहें ऐ साथ जी, याद करो धनी तुम ।
उतरी मेहर हक से, जगाओ अपनी आतम ॥५८॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! पल-पल श्री कुलजम स्वरूप की वाणी का मथन कर के अपने धाम धनी को याद कीजिए । इस वाणी से ही आतम जाग्रत होगी । क्योंकि सब पर धनी की मेहर बरस रही है ।

(प्रकरण ३४, चौपाई १६१४)

इन समय सूरत से, आया लक्ष्मीदास ।
रूपा बाई को लेइ के, बेटी जमुना खास ॥१॥

इस समय सूरत से लक्ष्मीदास अपनी धर्मपत्नी रूपा बाई तथा बेटी जमुना को लेकर दिल्ली पहुँचे ।

और भाई नारायण दास, और गोविन्द जी दास ।
रामबाई को लेइ के, दिल राज चरन की आस ॥२॥

नारायण दास और गोविन्द दास अपनी धर्मपत्नी रामबाई को लेकर श्री जी के दर्शनों की चाहना से दिल्ली में पहुंचे ।

Nijanand App

और सभा चंद छत्री, भागवती हरीराम ।
केतक दिन संग रहे, पीछे किया माया में विसराम ॥३॥

सभाचंद क्षत्रिय अपनी धर्मपत्नी भागवती को लेकर हरिराम के साथ श्री जी के चरणों में दिल्ली आए। कुछ दिन तक वाणी चर्चा का सुख लेकर फिर माया में ही अधिक शान्ति समझकर वापस अपने घर चले गए ।

लछमीदास के घर मिने, उपली द्रष्ट भई जोर ।
राज दीदार देवहीं, कछु न दिल में खोर ॥४॥

इधर लक्ष्मीदास जी के घर दिल्ली में श्री राजजी महाराज ने आड़ीका लीला करनी शुरू कर दी । और साक्षात् दर्शन देने लगे जिसमे किसी भी प्रकार का संशय नहीं रहा ।

नित आरोगन आवहीं, आवत बड़ा आवेस ।
तिस वास्ते माया का, कछु न रह्या लवलेस ॥५॥

हर रोज लक्ष्मीदास जी के घर श्री राज जी महाराज आरोगने लगे और लक्ष्मीदास जी को बड़ा आवेश आने लगा । उस समय लक्ष्मीदास जी को जरामात्र भी माया की चिन्ता नहीं रहती थी ।

और राज के दिल में, हांसी करने का काम ।
तिस वास्ते बातां करें, वायदा किया इस ठाम ॥६॥

श्री राजजी के दिल में तो सदा ही अपनी रूहों पर हांसी करने का ही काम है । इस वास्ते लक्ष्मीदास जी से बातें करते करते एक वायदा भी कर दिया ।

आज से सकुमार बाई, आवें आठमें दिन ।
तब राज बड़ो आदर कियो, कहे बैठाओ जोड़े सैयन ॥७॥

हे लक्ष्मीदास जी ! आज से आठवें दिन साकुमार बाई की आतम की जागनी तेरे द्वारा होगी । इस बात की सूचना जब लक्ष्मीदास जी ने श्री जी को दी तो उन्होंने उनका बहुत ही आदर किया और कहा कि आप मेरे बराबरी के आसन पर बैठिए ।

ऐ श्री राज की कृपा, काहू ऊपर होइ ।
सो मेरे आगे होइ, ऐह काम करे सोइ ॥८॥

तब श्री जी ने लक्ष्मी दास जी से कहा कि यह तो श्री राज जी महाराज की अपनी मेहर है कि वे जिस किसी पर भी मेहर करके जागनी का कार्य करायें । जो भी इस कार्य को करे, वह आगे चले, मैं उसके पीछे चलूंगा ।

Nijanand App

जो मेरे आगे होइ, या बैठे मेरे जोड़ ।
जो श्री देवचन्द्र जी सिर पर हैं, तो करों नही चित मोड़ ॥९॥

या तो वह मेरे आगे होकर जागनी का कार्य करे या मेरे साथ बैठ कर कार्य करे । यदि मेरे सिर पर साक्षात् श्री देवचन्द्र जी खड़े हैं अर्थात् मैं उनकी सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मैं उनसे कभी भी अपना भाव हटाऊंगा नहीं । जागनी का कार्य होना चाहिये, भले ही वह कोई भी करे ।

नाहीं तो मेरा पीछा, कोई जिन छोड़ो तुम ।
ऐह प्रकास देख के, जगाओ अपनी आतम ॥१०॥

यदि कोई मेरे से आगे भी नहीं चल सकता तथा मेरे समान भी नहीं चल सकता तो मेरी आज्ञा को ठुकराओ मत । मेरे असल स्वरूप की पहचान करके अपनी आतम को जगाओ ।

तब कह्या लखमीदास ने, मुझ से आगा ना होए ।
पर जोड़े तुमारे बैठोंगां, सकुमार जगाऊं सोए ॥११॥

तब लक्ष्मीदास जी ने कहा कि हे श्री जी ! मैं आपके आगे तो नही चल सकता परन्तु आपकी बराबरी में आसन पर बैठ कर साकुमार को जगाऊंगा ।

दिन दो-तीन जोड़े बेठा, फेर आड़े आई सरम ।
स्याम भीम ताना मारते, तब हुआ दिल नरम ॥१२॥

दो-तीन दिन तक तो बराबर लक्ष्मीदास श्री जी के जोड़े बैठता रहा तथा सुन्दरसाथ भी उनको धाम के धनी लक्ष्मीदास कह कर प्रणाम करने लगे पर अन्दर में कुछ भी शक्ति न होने से शर्म महसूस हुई। सूरत वाले श्याम भाई तथा भीम भाई जब धाम धनी कहने लगे तो 'जागनी मैं करूंगा' । इस बात का उनका अभिमान टूट गया ।

जब आठ दिन पूरे भये, श्री राजें दिया दीदार ।
तब इनने अरज करी, करो पूरा परवरदिगार ॥१३॥

जब आठ दिन पूरे हो गये और श्री राज जी बिना साकुमार के ही आये तब लक्ष्मीदास जी ने अर्ज की कि आज आठ दिन हो गये हैं । अपना वायदा पूरा कीजिए ।

तब राज हाथ से जुदे हुये, तब हांसी हुई इत ।
ए तो नही मुकरर, बखत रोज क्यामत ॥१४॥

तब श्री राज जी महाराज अन्तर्ध्यान हो गये तथा सब सुन्दरसाथ ने उनकी बहुत हांसी की । जागनी का कार्य किसी के हाथ की बात नहीं है । यह तो श्री राज जी महाराज ही जानते हैं कि साकुमार की जागनी किसके हाथ से होनी है और कब ब्रह्मांड को अखण्ड करना है ।

Nijanand App

फेर विचार करके, दिल्ली से चले जब ।
साहजहानपुर बूड़िए, आये पहुंचे तब ॥१५॥

फिर जब यह कार्य भी नहीं हुआ तो दिल्ली से चलकर श्री जी शाहजहांपुर बोड़िये आ गये ।

तहां आजूज माजूज नें, बड़ा जो किया सोर ।
मरगी पड़ी इन समें, आई थी इत जोर ॥१६॥

जैसे ही श्री जी वहां पहुंचे तो दज्जाल भी कमर कस कर खड़ा था । वहां मिरगी की बीमारी फैल गई जिससे दिन रात लोग मरने लगे (आजूज को दिन कहा है तथा माजूज को रात) ।

इन समें बूड़िए में, पकड़ा नागजी को ।
मलकल मौत झलूविया, तब मारा तिनका मोंह ॥१७॥

शाहजहांपुर बोड़िये में मिर्गी के रोग से अपने साथी नागजी भाई भी बीमार पड़े । अकाल मृत्यु ने पूरे जोर से आक्रमण करके नागजी भाई को मारना चाहा परन्तु मार नहीं सकी ।

श्री धाम दिखाइ के, दिया अपना जोस ।
तब काल को मारिया, हो गया फरामोस ॥१८॥

तब श्री जी ने उन्हें परमधाम का अनुभव कराकर अपने आवेश की शक्ति को नागजी भाई के अन्दर प्रवेश कराया तथा काल को भगा दिया । तब मिर्गी की बीमारी भी शान्त हो गई ।

इत सिरदार क्षत्री रहे, तिन करी ऊपर की पहिचान ।
सेवा करी तिन माफक, कछु न आया हीसे कान ॥१९॥

वहां एक क्षत्रिय सिरदार रहता था जिसने श्री जी के मुखारविन्द से चर्चा सुनकर ऊपरी पहचान की तथा सेवा का लाभ भी लिया किन्तु परमधाम का अंकूर न होने के कारण सुख न ले सका ।

इहां से निरमलदास को, और जने जो चार ।
खड़कारी राजा पास, भेजे कर विचार ॥२०॥

श्री जी ने यहां से निर्मलदास जी और दो-चार साथियों को खड़कारी के राजा जो हिन्दू धर्म पर मर मिटने वाला था, यह विचार करके उनके पास भेजा ।

Nijanand App

तहां जाए के देखिया, तो ए जागा नाहीं जोग ।
दिन दस एक रहके, फेर आये मिले संजोग ॥२१॥

तब श्री जी ने उनसे कहा कि तुम वहां जाकर सत्संग करके देखो । सुन्दरसाथ वहां गये परन्तु अंकूर न होने के कारण से जाग्रत नहीं हुआ । दस एक दिन रह कर सभी सुन्दरसाथ श्री जी से शाहजहानपुर में आकर मिले ।

तब विचार करके, जों सिर पर थे सुकन ।
सो सोभा दई महंमद को, पहिचान करे मोमिन ॥२२॥

तब जो श्री देवचन्द्र जी का फुरमान साकुंडल और साकुमार को जगाने का था उस पर विचार किया कि साकुमार (औरंगजेब) कुरान की वाणी से ही श्री राजजी महाराज की पहचान कर सकेगी ।

इन भांत सब्द फेर के, किये जब तैयार ।
तब भीम लालदास को कहूया, देओ पैगाम परवरदिगार ॥२३॥

इस तरह से २२ प्रश्नों वाली पाती की भाषा को हिन्दी से उर्दू भाषा में बदल कर जब तैयार कर लिया तब लालदास और भीम भाई को वह पाती दी और कहा कि औरंगजेब को आखरूल जमां ईमाम मेंहदी के आने का पैगाम दे दो ।

दोनों तैयार होए के, सिर चढ़ाया हुकम ।
चले बूड़िए सहर से, आये पहुंचे दिल्ली हम ॥२४॥

श्री लालदास जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! जैसे ही हम दोनों को हुक्म हुआ, हम दोनों शाहजहांपुर बूड़िए से दिल्ली पहुंचे ।

पीछे ते जबराईलें, दिया जब इलहाम ।
ए पैगाम जो भेजिया, पर होवेगा नहीं काम ॥२५॥

पीछे से फिर श्री जी को श्री राजजी का इलहाम हुआ कि अभी जो पैगाम भेजा गया है, उसका कार्य अभी नहीं होगा ।

पीछे से कान जी भाई को, श्री राजें भेजा जब ।
पेठे दिल्ली में बराबर, हकीकत ल्याया तब ॥२६॥

श्री लालदास जी और भीम भाई दिल्ली पहुंचे ही थे तो पीछे से कान्ह जी भाई को श्री जी ने भेजा और उसने जाकर अभी कार्य न होने की सब हकीकत कही ।

Nijanand App

तुमको पैगाम देने का, हुकम हुआ मनसूक ।
ए तुमको न मानेगा, पड़ेगी इनसे चूक ॥२७॥

कान्ह जी भाई ने कहा कि जो श्री जी ने आपको पैगाम देने का हुकम दिया था वह उन्होंने रद्द कर दिया है क्योंकि हिन्दू का तन होने के कारण वह कभी भी इस पाती पर विश्वास नही करेगा और कहीं मरवा न डाले ।

हमको उत आवन देओ, आये के करें विचार ।
जैसा लाग देखेंगे, तैसा करें करार ॥२८॥

श्री जी ने कहलवा भेजा था कि हमको दिल्ली आने दो फिर सब मिलकर विचार करेंगे । जैसा अवसर होगा वैसा ही कार्य करना निश्चित करेंगे ।

मास एक इत रहे, फेर चले हरद्वार ।
आये हरद्वार में, ताको कहों विस्तार ॥२९॥

शाहजहांपुर बोड़िये से चलकर श्री जी दिल्ली आए । एक महीने दिल्ली में रहे । सम्वत् १७३५ में वैशाख का महीना था और हरिद्वार में कुम्भ के मेले पर जाना निश्चित कर कुछ सुन्दरसाथ को लेकर श्री जी आए । अब हरिद्वार में जो बीतक हुई उसे विस्तार से कहता हूं ।

साका सालवाहन का, सोरह से पूरन ।
बैठा साका विजियाभिनन्द का, तब फिराये फिरके सैयन ॥३०॥

साका शालिवाहन (१६००) का उस वर्ष पूरा हो रहा था । हरिद्वार में पहुंचकर सब धर्माचार्यों से शास्त्रार्थ करने के पश्चात् जब सबको एक पूर्ण ब्रह्म की पहचान सब ग्रन्थों के अनुसार कराई तो सबने शालिवाहन की ध्वजा को हटाया और श्री विजियाभिनन्द बुद्ध की शाका को फहराया ।

विक्रमाजीत के राज से, बरस सत्रह सै पैंतीस ।
तब जिद्द हुई फिरकन सों, बुद्ध ईस्वरों के ईस ॥३१॥

विक्रमाजीत के राज्य से १७३५ वर्ष चल रहा था । तब हिन्दू धर्म के सम्प्रदायों से ईश्वरों के भी ईश्वर श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी से शास्त्रार्थ हुआ ।

हरद्वार के मेला में, चार सम्प्रदाय ताहिं ।
षट दर्सन भी तहां मिले, दस नाम सन्यासी जाहिं ॥३२॥

हरिद्वार के मेले में वैष्णवों के चारों सम्प्रदाय, छः दर्शन तथा दस नाम सन्यासी मत भी वहां पधारे थे ।

Nijanand App

चार वर्ण चार आश्रम, सबे भये एक ठौर ।
सबने देख श्री राज को, कीनी दिल सक और ॥३३॥

चारों आश्रम तथा चार वर्णों के मुनिजन भी एक जगह इकट्ठे हुए । श्री जी की वेशभूषा को देखकर सबके दिल में संशय हो गया ।

कह्या तुम्हारी राह तो नई है, हम सुनी न देखी कांह ।
झारो दीजे आपनों, तुम हम मारग में नांह ॥३४॥

सबने मिलकर कहा कि हे स्वामी जी ! आपका कोई नया ही मार्ग मालूम होता है क्योंकि न हमने ऐसा कहीं सुना है और न देखा है । हमें लगता है कि शायद आप हिन्दू नहीं हैं इसलिए आप अपना परिचय दीजिए ।

तब कहे बचन श्री राज नें, तुम प्राचीन पुरातम ।
सो कहो हमें समझाय कें, आपनो इष्ट जो धरम ॥३५॥

तब श्री जी ने उत्तर दिया कि आप सबके मार्ग बहुत पहले से चले आ रहे हैं । कृपया आप अपने धर्म और इष्ट को मुझे समझाकर पहचान कराइए ।

क्रोध अहम को छोड़के, चितसों कहो समझाय ।
कहो यथार्थ वेद ले, सोई ग्रहें हम आय ॥३६॥

आप सब आचार्य गण हैं । मेरे प्रश्न को चित्त से सुनकर समझाइए । कृपया अहं और क्रोध को त्यागकर वेद और शास्त्रों के प्रमाण से ही सब कहें । हम तो धर्म धारण करने के लिए आए हैं ।

अपनो दृढ़ाव जो होय, सो हमको देओ बताय ।
तापर सक हमें होवहीं, सो तुम देओ मिटाय ॥३७॥

आपने अपने मार्ग में किस पद्धति के अनुसार क्या निश्चय कर रखा है ? कृपया हमें बताइये । फिर यदि मेरा उस पर कोई संशय होगा तो उसे मिटा दीजियेगा ।

तब बोले रामानुज, सब सास्त्र वेद मत इष्ट ।
कहों अगोचर पन्थ सही, देखो अपनी दृष्ट ॥३८॥

तब वैष्णव मत के रामानुज सम्प्रदाय के आचार्य ने अपने सम्प्रदाय का शास्त्र, वेद, इष्ट और सब सिद्धान्त बताया और कहा कि हमारा मार्ग अलौकिक ज्ञान देता है ।

Nijanand App

हमारे गुरू धर्म में, कही नाम माला उर माहिं ।
अच्युत गोत्र अत सुचि परम, प्रभु अनन्त साखा जो आहिं ॥३९॥

हमारे गुरू धर्म में नाम का सुमिरन हृदय में ही करना होता है । हमारे गोत्र का नाम अच्युत है जो बहुत पवित्र है और स्वयं प्रभु ने आकर हमारे सम्प्रदाय को चलाया था ।

सुकल हमारो वरण है, सब वर्णों से बाहिर ।
साम वेद द्वार श्रवना, मुक्त समीपी जाहिर ॥४०॥

हमारा वर्ण शुक्ल है जो सब वर्णों से उत्तम है । सामवेद का हम श्रवण करते हैं और वैकुण्ठ की सामीप्य मुक्ति हमें प्राप्त होती है ।

मठ बैकुण्ठ है हमारो, सुमेर प्रदखिणा जान ।
बीज मंत्र निराकार है, नभ सम ब्रह्मे मान ॥४१॥

हमारा धाम वैकुण्ठ है तथा सुमेरू पर्वत की प्रदक्षिणा करते हैं । परमात्मा को निराकार स्वरूप का बीज मानते हैं तथा परमात्मा को आकाश के समान व्यापक मानते हैं ।

पद्मनाभ जो क्षेत्र है, मेल कोटा सुख बिलास ।
लक्ष्मी इष्ट अत गोप है, उजल अति प्रकास ॥४२॥

हमारे सम्प्रदाय का क्षेत्र पद्मनाभ है । हमारे सुख का स्थान मेल कोटा है । लक्ष्मी जी हमारे इष्ट हैं, जो अति गोपनीय है । हमारा मार्ग अति उज्जवल और ज्ञान का प्रकाश करने वाला है ।

ये पद्धत लक्ष्मी से चली, ये पद्धत बिन भ्रम आए ।
चौदह भवन पर बैकुण्ठ है, सोइ अखाड़ा सुहाए ॥४३॥

इस पद्धति को लक्ष्मी जी ने स्वयं आकर चलाया था इसलिए हमारी पद्धति में कोई भी शक-सन्देह नहीं है । चौदहवां लोक वैकुण्ठ है और वही हमारा मुक्ति स्थान है अर्थात् वैकुण्ठ में हमारी सामीप्य मुक्ति होती है ।

रंगनाथ हम धाम है, नदी काबेरी तीरथ ।
देवी है कमला सही, सारे सबे अरथ ॥४४॥

रंगनाथ हमारा धाम है । काबेरी नदी को हम तीर्थ मानते हैं । कमला जी हमारी देवी हैं जो सब मनोकामनाओं को पूर्ण करती हैं ।

Nijanand App

श्री नारायण हैं देवता, विस्णु आचारज होय ।
गायत्री है अलख निरंजन, कही पद्धति रामानुज सोय ॥४५॥

नारायण भगवान हमारे देवता हैं । विष्णु भगवान हमारे सम्प्रदाय के चलाने वाले आचार्य हैं । गायत्री जो अलख निरंजन का मन्त्र है, यह हमारे सम्प्रदाय की पद्धति है ।

सुन पद्धत श्री राज नें, किये प्रस्न जो एह ।
कह्यो पंथ अगाध जो, तुम धन्य रामानुज तेह ॥४६॥

श्री जी ने रामानुज सम्प्रदाय की पद्धति को सुनकर कहा कि आप का पंथ अगम अगाध है । हे रामानुज पंथ वालों ! आप धन्य हैं ।

जग माहें की कही तुम, कहे वेद जगत को नास ।
पिण्ड ब्रह्माण्ड दोऊ प्रलय में, तो कहां जीव को वास ॥४७॥

आपने जो भी पद्धति बताई है वह चौदह लोक के अन्दर है । वेद के ज्ञान के अनुसार महाप्रलय में पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों ही लय हो जायेंगे तो फिर मेरे जीव को कौनसा स्थान मिलेगा ?

तब बोले नीमानुज, वेद इस्ट जप धाम ।
अपनी सम्प्रदाय सब कहों, मूल ग्रहो बिसराम ॥४८॥

रामानुज सम्प्रदाय के आचार्य जब इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके तो नीमानुज सम्प्रदाय के आचार्य बोले कि हम अपने सम्प्रदाय की पद्धति के अनुसार वेद, इष्ट, जप और धाम का सब परिचय देते हैं । आप उसे सुनकर शान्ति प्राप्त कीजिए ।

मथुरा है साला सही, धर्म क्षेत्र गोकुल पुनीत ।
सुख विलास वृन्दावन में, धाम द्वारका नीत ॥४९॥

मथुरा हमारी शाला है । धर्म क्षेत्र पवित्र गोकुल है । सुख विलास का स्थान वृन्दावन है । धाम हमारा द्वारिका है ।

नदी गोमती तीरथ, इष्ट रूकमणी होय ।
यजुर्वेद हर नाम की माला, टारे छल सब सोय ॥५०॥

गोमती नदी हमारा तीर्थ है । रूक्मिणी हमारी इष्ट है । यजुर्वेद का हम श्रवण करते हैं । हरि नाम का जाप करते हैं जिससे सब कष्ट दूर होते हैं ।

Nijanand App

वृन्दादेवी मुक्त सरूपी, प्रणव मंत्र ऊंकार ।
चली सम्प्रदा सनकादिक से, प्राचीन मत सार ॥५१॥

देवी हमारी वृन्दा है । मुक्ति सारूप्य है जो बैकुण्ठ में मिलती है । ॐ प्रणव ब्रह्म का मन्त्र है । सनकादिक जी ने आकर हमारे सम्प्रदाय को चलाया है जो अति श्रेष्ठ और प्राचीन है ।

गोपाल वंस है गायत्री, गोपाल मंत्र है जान ।
नारद हैं आचारज, ऋषि दुर्वासा मान ॥५२॥

गोपाल गायत्री का हमारा मन्त्र है । हमारे आचार्य नारद हैं । दुर्वासा जी हमारे ऋषि हैं ।

विस्णु को वाहन सही, गरूड देवता सोए ।
रक्षा करें सदा सन्त की, ए पद्धत नीमानुज होए ॥५३॥

विष्णु के वाहन स्वरूप गरूड़ जी हमारे देवता हैं, जो सदा संतों की रक्षा करते हैं । यह हमारे नीमानुज सम्प्रदाय की पद्धति है ।

तब किये प्रस्न श्री राज ने, तुममें नहीं विचार ।
कछु कही जगत के परे की, कछु जगत मंझार ॥५४॥

तब श्री जी ने कहा कि आपने कुछ जगत के अन्दर की बात कही है तथा कुछ जगत से परे अखण्ड की बात कही है । मालूम होता है कि आपको सत्य और असत्य की पहचान ही नहीं है ।

सार असार को एक किये, मिले नही मत वेद ।
तुम बिन सतगुर क्या करो, छूटे नही भव खेद ॥५५॥

सत्य और असत्य कभी भी मिल नहीं सकते । इसमें बहुत बड़ा भेद है । जब तक आप सतगुरू के चरण नहीं पाएंगे, तब तक भवसागर से पार नहीं होंगे ।

तब विस्णु स्याम अचारज ने, अपनी सम्प्रदा सब ।
इस्ट उपासना वेद जाप, कहों सुनो तुम अब ॥५६॥

तब विष्णु श्याम सम्प्रदाय के आचार्य ने अपने सम्प्रदाय की पद्धति का परिचय दिया और बोले कि हे स्वामी जी ! हम वेद, इष्ट, जप आदि अपनी पद्धति के अनुसार कहते हैं, आप सुनिए ।

विस्णु कांची है धर्मसाला, स्वेत गंगा चक्र तीरथ सोए ।
सुख विलास इन्द्र दमन मध, जहां निरमल सब होए ॥५७॥

दक्षिण भारत में कांचीपुरम (विष्णु कांची) हमारी धर्मशाला है । हमारा तीर्थ श्वेत गंगा चक्र है । हमारे सुख विलास का स्थान इन्द्रदमन है, जहां सभी निर्मल होते हैं ।

Nijanand App

मारकण्ड है तीरथ, परसोतम पुर धाम ।
इस्ट लछमी है सही, जगन्नाथ सेवन उपासना नाम ॥५८॥

हमारा तीर्थ मारकण्ड ताल है । धाम पुरूषोत्तमपुर है । हमारे इष्ट लक्ष्मी जी हैं । जगत के स्वामी विष्णु भगवान के नाम से हम उपासना करते हैं ।

अथर्व वेद हमरो सही, माला नाम की सार ।
अच्युत है गोत्र पुन, त्रिपुरारी साखा धार ॥५९॥

हम अथर्व वेद का श्रवण करते हैं । परमात्मा के नाम (जप) को हम सार वस्तु मानते हैं । हमारा गोत्र अच्युत है, जो बहुत पवित्र है । हम त्रिपुरारी शाखा को मानते हैं ।

सुकल वर्ण तुम जानियो, तुलसी मंत्र है जाप ।
जल बिंव ऋषि हैं देवता, वामदेव आचारज थाप ॥६०॥

हमारा शुक्ल वर्ण है । तुलसी की माला पर हम जप करते हैं । हमारे ऋषि वरूण देवता हैं । वामदेव हमारे आचार्य हैं ।

ब्रह्म गायत्री जानियो, महादेव से सम्प्रदा आए ।
सायुज मुक्त हमने ग्रही, ए विस्णु स्याम सम्प्रदा सुहाए ॥६१॥

ब्रह्म गायत्री हमारा मंत्र है । महादेव जी ने इस सम्प्रदाय को चलाया था । वैकुण्ठ में हमें सायुज्य मुक्ति प्राप्त होती है । यह हमारे विष्णु श्याम सम्प्रदाय की पद्धति है ।

तुम तो ऐ जग में कही, ए कहे बचन श्री राज ।
वेद पुराण जग नास कहे, रहे कहां सम्प्रदा विराज ॥६२॥

तब श्री जी ने यह सुनकर कहा कि आपने तो सब ज्ञान चौदह लोकों के अन्दर का ही बताया है। वेदों और शास्त्रों के अनुसार महाप्रलय में जगत का नाश हो जाता है तो तब आपके सम्प्रदाय का ज्ञान कहां रहेगा ?

तब कही माधवाचारज ने, हमारी सम्प्रदा जोए ।
गोत्र क्षेत्र इस्ट धाम वेद, सुनों आप तुम सोए ॥६३॥

जब विष्णु श्याम सम्प्रदाय के आचार्य को कोई भी उत्तर नहीं आया तो माध्वाचार्य सम्प्रदाय के आचार्य बोले कि हम आपको अपने सम्प्रदाय की पद्धति के अनुसार गोत्र, क्षेत्र, इष्ट, धाम और वेद बताते हैं। आप कृपा करके सुनिए ।

Nijanand App

पुरी अवन्तिका साला सही, नीमखार क्षेत्र होए ।
सुख विलास है अंगपात मध, बद्रीनाथ धाम है सोए ॥६४॥

हमारी शाला अवन्तिकापुरी (उज्जैन) है । नैमिषारण्य हमारा क्षेत्र है । अंगपात के मध्य हमारे सुख का स्थान है । बद्रीनाथ हमारा धाम है ।

अलखा नदी तीरथ हमारो, विध उपासना जान ।
सावित्री तो इस्ट है, आद वेद ऋग मान ॥६५॥

हमारा तीर्थ अलखनन्दा है । ब्रह्मा जी की हम उपासना करते हैं । सावित्री देवी हमारे इष्ट हैं । ऋग्वेद का हम श्रवण करते हैं ।

हरनाम की माला उर में, विस्णु गायत्री है गान ।
विस्णु हँस रूप मंत्र है, ब्रह्मा आचारज प्रमान ॥६६॥

हरिनाम की माला का हम हृदय में जाप करते हैं । विष्णु गायत्री मन्त्र का हम गायन करते हैं । विष्णु के हंस रूप का हमारा मन्त्र है । ब्रह्मा जी हमारे आचार्य हैं ।

हंस ऋषि पुनि देवता, ब्रह्मा तें सम्प्रदा आए ।
सालोक है मुक्त हमारी, ए पद्धत माधवी सुहाए ॥६७॥

हंस ऋषि हमारे पवित्र देवता हैं । ब्रह्मा जी ने हमारे सम्प्रदाय को चलाया था । वैकुण्ठ में हमें सालोक्य मुक्ति मिलती है । यह पद्धति हमारे माध्वाचार्य सम्प्रदाय की है ।

तब कहे प्रस्न श्री राज नें, ए तो कही जग माहिं ।
कहै वेद जग भरम है, तब मुक्त कही सो काहिं ॥६८॥

श्री जी ने माध्वाचार्य की पद्धति को सुन कर प्रश्न किया कि आपने कुल ज्ञान जगत के अन्दर का कहा है तथा वेद जगत का नाश कहते हैं तो फिर मुक्ति कहां से मिलेगी ?

(प्रकरण ३५, चौपाई १६८२)

॥ अथ दस नाम सन्यासी की विधि ॥

फेर दस नाम सन्यास जो, बोले इस्ट प्रमाण ।
मन्या सात मठ चार हमारे, परम हंस मत ए जान ॥१॥

तब दस नाम सन्यास मत के आचार्यों ने प्रमाण सहित अपने सम्प्रदाय का परिचय दिया कि हमारे सम्प्रदाय में सात मन्या हैं और चार मठ हैं तथा यह मत परमहंस मत है ।

Nijanand App